International Indexed, Refereed Research Journal, ISSN -2250-253X, (Print), E-ISSN 2320-544X, Issued – 8, Vol- I, August, 2013

तुलसी के काव्य में लोकतत्व

* अनीता देवी

* सहाप्राध्यापक राजकीय महाविद्यालय, जीन्द

'साहित्य समाज का दर्पण है।' साहित्य में वही प्रस्तुत किया जाता है जो समाज में घटित होता है। साहित्य समाज में परिवर्तन लाता है और समाज के अनुरूप ही साहित्य में भी परिवर्तन होता चला जाता है। जो साहित्यकार केवल रूमानी व रोमांस के ही अपने साहित्य में परोसता है वह कुछ भी वक्त में अन्त को प्राप्त हो जाता है।

तुलसीदास कविचतुष्ट्य में गिने जाते हैं। उन्होंने साहित्य को समाज का आईना बनाकर प्रस्तुत किया। उनकी प्रतिभा देशकाल बद्ध न होकर सार्वभौमिक है। वे केवल इतिहास के आलेख मात्र नही हैं अपितु प्रत्येक सीढ़ी उनके कर्तव्य को नई दृष्टि में देखती है और नए सिरे से उनका मूल्यांकन करती है। तुलसीदास ने अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा के कारण समाज के लिए सारे सम्बन्धों को जोड़ा है, उत्तर–दक्षिण की धुरी को एकता के सूध में बांधा है और बहुजन हिताय की अपेक्षा सर्वजनहिताय की कामना की हैं। संत निवृतिमार्गी थे और गोस्वामी जी की निवृति–प्रवृति की अति–शयता से बचकर मध्य मार्ग पर चलने के पक्षधर/नायपंथियों और संतो ने जिस ढ़ंग से समाज पर प्रहार किया था परिवार व्यवस्था पर चोट की थी, उसका समाज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और प्रेम के उदान्त स्वरूप के विकास में बाधा पड़ी। इसके विपरीत गोस्वामी जी ने उस प्रशस्त मार्ग को अपनाया जिसमें वेद और लोक का समन्वय था, जिसके द्वारा समाज के सारे संबंधो–पिता–पुत्र, सेवक–स्वामी पति–पत्नी, भाई–भाई को आदर्श रूप प्रदान किया। संतो ने संसार की नश्वरता तथा पारिवारिक और सामाजिक संबंधो की क्षणभुंगरता दिखाकर लोकचित को भीस और पलायनवादी बनाने का प्रयास किया, गोस्वामी जी ने कर्म–क्षेत्र में निरंतर संघर्ष करते हुए, दृष्प्रवृत्तियों का दमन करते हुए परलोक के साथ इहलोक को भी समुन्नत बनाने का परामर्श दिया। उन्होंने कहाँ

^?kj dhUg ?kj tkr g ?kj jk[k ?kj tk;A
r|yl h ?kj cu chp gh] jfgj, i|ei|j Nk;AA**

उनके काव्य में काव्य और शिल्प, विधेय और विज्ञान दोनों में शास्त्रीय परम्परा और लोकधराओं का अद्रभुत सामजस्य प्रस्तुत किया। उनका काव्य परम्परा और प्रगतिशील के सह–अस्तित्व का अनुपम उदाहरण है। तुलसी–काव्य की लोकप्रियता तथा आधुनिक परिपेक्ष्य में सार्थकता का मुख्य कारण हैं। वैदिक परम्पराओं की स्वीकृति के साथ सामान्य जन में वसित भावनाओं का प्रकाशन। संत–मत और लोक–मत के समन्वय से ही उनका काव्य काल और स्थिति की सतत् परिवर्तनशीलता में भी शिक्षित और अशिक्षित ग्रामीण और नागर बुध और अबुध जनों में समान रूप से समादृत है।

गोस्वामी जी के काव्य में लोकतत्व के दर्शन न केवल उनके विषय–वस्तु के बल्कि शिल्पा, भाषा और शैली में भी होते हैं। जहाँ तक भाषा का प्रश्न हैं, गोस्वामी जी ने संस्कृतानिष्ठा भाषा का मोह त्यागकर जनभाषा में रचना की। तत्कालीन सामंती समाज में वही समादृत होता था, जो देववाणी में काव्य रचना करता था। उन्होंने ऐसी काव्य–रचना का संकल्प लिया था, जिससे 'सुरसरि सम सब कहँ हित होई।' इसी लोकमंगल की भावना से प्रेरित होकर उन्होंने भाशा के संबंध में बड़ा व्यापक और उदार दृष्टिकोण अपनाया। भाशा के संबंध में उनकी मान्यता थी।

^^dk Hkk"kk dk l|Ld`r] i|e pkfg, lkpA
dke tk vko dkejh] dk y dj d|ekp**।

इन पक्तियों से उनका आश्य था–संस्कृत कुमाच है यानि रेशमी धागा है और देशी भाषा कामरी'' एक अमिजात्य वर्ग की अमिरूचि की सूचक है तो दूसरी सामान्य जन की प्रतिनिधि। 'कामरी' से भाषा की स्वाभाविकता, प्रवाह सजीवता और अंलकारहीनता का बोध होता है। जबकि 'कुमाच' रीतिबद्धता चमत्कारतिशयता और अलंकार–प्रचुरता का बिम्ब प्रस्तुत करता है। संस्कृत में लिखने से उनका काव्य बुध–समाज तक ही सीमित रह जाता जन–जन का कण्ठहार न बन पाता। वस्तुतः सच्चा लोकनायक सदैव लोकभाषा को ही माध्यम बनाता है। उन्होंने जहाँ काव्य–रचना में संस्कृत के आचार्यो द्वारा निर्दिष्ट लक्षणों का अनुसरण किया हैं, वहीं लोकशैली को भी अपनाया है। उनका 'रामलता नहछू' लोकशैली का काव्य है जो 'सोहर' नामक लोकगीत में लिखा गया है। 'पार्वती मंगल' और जानकी मंगल' के शिल्प–विधान में लोकशैली का प्रभाव है। उन्होंने अपने काव्य–विषय का आधार अपने इष्ट देव राम को बनाया उनके राम सगुण–निर्गुण सू परे लोकमंगल के प्रतीक है। विश्व में जितने भी महापुरूष अवतरित हुए, उन सबकी विशेषताएं समस्टि रूप से राम में पुंजीभूत हैं। वे सर्वगुण सम्पन्न हैं। आदर्श लोकमर्यादा की जो दीक्षा हम राम से मिलती है वह भारतीय इतिहास में अन्यतय है। उनके राम परब्रहम परमेश्वर होते हुए भी लोकचित की पीड़ा से अभिभूत दिखाई

पड़ते हैं, वन–मार्ग में भोले–भाले ग्रामीण जनों से तादात्यय स्थापित करते हैं शबरी की आतिथ्य ग्रहण करते है और वानर भालू आदि अनार्य जातियों को संगठित करते हैं। इस प्रकार गोस्वामी जी मानव–मात्र में एकता समानता ओर बंधुत्व भाव की स्थापना करते हुए भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते है। तुलसी ने रीति–रिवाजों संस्कारों, सामाजिक–पारिवारिक प्रथाओं रूढ़ियों आदि के वर्णन में लोकमान्यता को वरीयता दी है। हिन्दू जीवन को समुन्नत और सुव्यवस्थित बनाने के लिए सोलह संस्कारों का विधान है। गोस्वामी जी में उनमें से अधिकांश के वर्णन में शास्त्रीय विधान के अतिरिक्त लोकपद्धति का भी सहारा लिया है। रामचरित–मानस में रामजन्म सामान्य शिशु जनम से किचित् भिन्न रूप में दिखाया गया है, आकाश से पुष्प–वृष्टि कराई गई है। मानस की अपेक्षा गीतावली में रामजन्म वर्णन में लोकसंस्कृति के तत्त्व अधिक प्रखर हो उठे हैं।

उनकी रचना 'गीतावली' में बाल–वर्णन गोस्वामी जी की लोकतात्विक दृष्टि का अनुपम उदाहरण है। हिन्दी में सूरदास के अतिरिक्त इतना सरस हदय ग्राही और स्वाभाविक वात्सल्य वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। बाल–चेष्टाओं ओर मातृ–हदय की कोमल भावनाओं की मनोरम अभिव्यक्ति के साथ लौकि रूढ़ियोंु और अंधविश्वासों का प्रस्तुतीकरण गोस्वामी जी को सच्चे लोक कवि के धरातल पर प्रतिष्ठित कर देना है। राम का शिशु जीवन एक साधारण बालक के रूप में चित्रित किया गया है। प्रत्येक माता अपने बच्चे के उज्जवल भविष्य की कामना करती है। वह येन–केन प्रकारेण बच्चे का भविष्य जानना चाहती है। इसी कारण बच्चों की जन्म–पत्रिका बनवाई जाती है। लोकचित का अंधविश्वास ऐसे मायावियों के पाप का प्रायः शिकर हो जाता है। एक ऐसे ही बूढ़े ब्राहमण ज्योतिषी कौशल्या को राम का हाथ दिखाते हुए बताया गया है। इससे हमें तुलसीदास की उस मन स्थिति का आभास हो जाता है जिससे वे दिखावे व अंधविश्वास के विरोधी थे।

विवाह जो स्त्री–पुरूष के जीवन को आबाद्व करने का माध्यम हैं, उस संस्कार का निर्वाह भी तुलसीदास ने अपने काव्य में बखूबी दिखाया है। गोस्वामी जी का मन अन्य संस्कारों की अपेक्षा विवाह–वर्णन में अधिक रमा है। कवितावली, गीतावली आदि काव्यों में तो विवाह के चित्रण मिलते ही हैं, इसके अतिरिक्त उन्होंने स्वतन्त्र रूप में तीन मंगल काव्यों की भी रचना की है। तुलसी साहित्य में मुख्य रूप से शिव पार्वती विवाह और राम–जानकी विवाह को विस्तृत वर्णन मिलते है।

रीति–रिवाजों और संस्कारों के अतिरिक्त तुलसी–साहित्य में विभिन्न वर्गो की गहरी अनुभूतियां सूक्तियां, नीति–कथन, मिक्ष धर्म स्त्री–धर्म आदि के निरूपण, ज्योतिष, कर्म भाग्य आदि की चर्चा, ग्राम–देवता कुल–देवता, पितृ पूजा व्रत–तीर्थ आदि का विस्तृत वर्णन है जो तुलसीदास को भारतीय संस्कृति के सच्चे प्रतिनिधि के रूप में प्रतिष्ठत कर देती है।